



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 12, December 2022

ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.118

 9940 572 462

 6381 907 438

 ijirset@gmail.com

 www.ijirset.com

1947 के दौरान भारत का विभाजन और महिलाएं

कृष्ण लाल, सहायक प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान विभाग,

के टी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रतिया, फतेहाबाद

सार : 1947 में भारत का विभाजन विश्व इतिहास की एक सांकेतिक घटना है, न कि केवल भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में। इसे ब्रिटिश शक्तियों से देश की स्वतंत्रता के लिए भुगतान की गई अपरिहार्य कीमत के रूप में देखा गया। इस घटना में झुलसने वालों में ज्यादातर महिलाएं थीं। यह अनुमान लगाया गया था कि विभाजन के दौरान, लगभग 75,000 से 100,000 महिलाओं को अन्य धार्मिक दलों के लोगों द्वारा बलात्कार या हत्या करने, या वेश्यावृत्ति में बेचने, या शादी के लिए मजबूर करने के लिए अपहरण कर लिया गया था। यह पत्र भारतीय उपमहाद्वीप के विभाजन के दौरान महिलाओं की स्थिति और उससे उत्पन्न मुद्दों की एक झलक प्रदान करता है।

किसी भी गली-मोहल्ले में जब कोई साम्प्रदायिक भावना भड़क उठती है या हिंसा हावी हो जाती है, चाहे वह साम्प्रदायिक हिंसा हो या जाति या अंतरराज्यीय, अक्सर महिलाएं प्रतिद्वंद्वी समूहों की सबसे बुरी शिकार बन जाती हैं।¹ गृहयुद्ध की स्थिति में, जहाँ लगभग हर पुरुष अपनी मातृभूमि के लिए लड़ने वाला एक सैनिक बन जाता है, महिलाओं को एक "क्षेत्र" के रूप में देखा जाता है जिस पर कब्जा किया जाना है।² विभाजन के अन्य लैंगिक पहलुओं की तरह, हिंसा की शिकार और उत्तरजीवी दोनों के रूप में महिलाओं का अनुभव मानक ऐतिहासिक विवरणों से अनुपस्थित है।³ महिलाएं अपहरण और बलात्कार का शिकार हुईं। वे अपने माता-पिता, परिवारों और यहां तक कि धर्म से भी अलग हो गए थे। यह कहना सत्य प्रतीत हो सकता है, लेकिन यह याद रखना उचित है कि आधी आबादी जो मारी गई, विस्थापित या उखड़ी गई, वे महिलाएं थीं। पुनर्निर्माण या पुनर्निर्माण के कार्य का एक बड़ा हिस्सा महिलाओं के कंधों पर आ गया।⁴ विभाजन, विस्थापन और लोगों के उखड़ने की कहानी के साथ नवगठित सीमाओं के दोनों ओर हजारों महिलाओं के अपहरण, बलात्कार और विधवापन की कहानी भी थी।⁵

पैदल, ट्रेन, बस और कार से लोगों के बड़े पैमाने पर आंदोलन ने बच्चों, महिलाओं, वृद्धों और विकलांगों को विशेष रूप से कमजोर बना दिया।⁶ भारत के विभाजन के दौरान, अनुमानित 75,000 से 1,00,000 महिलाओं को अन्य

धर्मों के सदस्यों द्वारा हत्या और बलात्कार के लिए अपहरण कर लिया गया, वेश्यावृत्ति के लिए बेच दिया गया या शादी के लिए मजबूर कर दिया गया।⁷ महिलाओं को नए धर्म स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया। मैं किसी ने मना किया, उसके साथ या तो बुरा बर्ताव किया गया या रैडक्लिफ लाइन के दोनों ओर उसके साथ छेड़छाड़ की गई।⁸ औरतों को इस तरह बाँटा गया जैसे अंगूर या संतरे की टोकरियाँ भेंट की जाती हैं और बेची जाती हैं।⁹ कुछ को बाजार में 10 या 20 रुपये प्रति पीस के हिसाब से बेचा जाता था, जबकि अन्य को मित्रों या परिचितों को उपहार के रूप में भेजा जाता था। इनमें से कई महिलाओं को उनके अपहरणकर्ताओं के हाथों दैनिक शारीरिक और यौन शोषण का सामना करना पड़ा।¹⁰ विभाजन के समय कई महिलाओं के साथ की गई इस दर्दनाक हिंसा ने स्थापित पितृसत्तात्मक व्यवस्था द्वारा उन्हें दी गई स्वयं, सामाजिक या अस्तित्व संबंधी सभी भावनाओं को ध्वस्त कर दिया।¹¹

लियोनार्ड मोस्ले ने अनुमान लगाया कि लगभग 100,000 युवा लड़कियों को दोनों पक्षों द्वारा अपहरण कर लिया गया था, जबरन परिवर्तित किया गया था या नीलामी ब्लॉकों पर बेचा गया था।¹² और भी कई दुखद मामलों में, पिता और पति, इस डर से कि उनकी बेटियों और पत्नियों के साथ जल्द ही बलात्कार किया जाएगा (या दूसरे धर्म में परिवर्तित हो जाएगा), लड़कियों और महिलाओं को आत्महत्या करने के लिए राजी और मजबूर किया, कहीं ऐसा न हो कि ऐसी घटना उनके परिवार के "कलंक" को "दाग" दे। सम्मान "या समाज में खड़ा होना या उन्होंने अपनी महिला रिश्तेदारों को खुद ही मार डाला। भाइयों, भतीजों, बेटों और पतियों की अपनी महिला रिश्तेदारों की हत्या करने की कहानियाँ (कुछ अपुष्ट, अन्य सिद्ध) हैं, ताकि उन्हें जबरन धर्म परिवर्तन और बलात्कार की शर्म से बचाया जा सके। लेकिन कुछ महिलाओं ने कई मामलों में स्वेच्छा से खुद को और अपनी बच्चियों को कुओं में फेंक कर या आत्मदाह कर अपनी जान दे दी। जो महिलाएं इन अत्याचारों से बची रहीं, वे अपनी काली वास्तविकताओं के साथ आगे नहीं रह सकीं और आत्महत्या कर लीं।

यौन उल्लंघन की भयावहता के अलावा, कई बलात्कार पीड़ितों को सचमुच अपनी शर्म के शारीरिक चिन्ह पहनने पड़ते थे- बलात्कारी अक्सर लड़कियों की खाल को निशानों और भित्तिचित्रों के साथ विकृत या विकृत कर देते थे जो उल्लंघनकर्ताओं के धार्मिक या राजनीतिक संबंध को दर्शाता था, जिसमें टैटू वाले वाक्यांश शामिल थे। "जय हिंद" ("लॉन्ग लाइव इंडिया") या "पाकिस्तान जिंदाबाद" ("लॉन्ग लाइव पाकिस्तान") या हिंदू त्रिशूल या इस्लामिक वर्धमान चाँद जैसे प्रतीक। एक बार एक लड़की के साथ बलात्कार हुआ, उसने समाज में अपना मूल्य और स्थान खो दिया, वह

अपने ही परिवार द्वारा भी अवांछित थी। ज्यादातर मामलों में, बलात्कार पीड़िता अपने बलात्कारियों से शादी कर लेती है, अपना धर्म बदल लेती है और अपने जन्म के परिवारों को फिर कभी नहीं देखती है।

उर्वशी भारतीय नारीवादी और लेखिका बुटालिया ने बताया कि इनमें से कुछ महिलाओं को वेश्यावृत्ति के लिए बेच दिया गया था। “ कुछ हाथों-हाथ बिक गए... कुछ को पत्नियों के रूप में ले लिया गया और धर्म परिवर्तन करके शादी कर ली गई। और कुछ गायब हो गए।

1947 के बाद से हिंसा के आघात ने कम से कम तीन पीढ़ियों को प्रभावित किया है, क्योंकि कुछ बची हुई महिलाएं अब बुजुर्ग महिलाएं हैं और केवल उस क्रूरता पर विचार करना शुरू कर रही हैं जिसे उन्हें सहना पड़ा था। ब्रिटेन में डी मॉन्टफोर्ट विश्वविद्यालय में दक्षिण एशियाई अध्ययन की प्रोफेसर पिप्पा विडी कहती हैं, "इसमें से अधिकांश में छिपे हुए इतिहास को उजागर करना और महिलाओं के विवरणों को विभाजन को समझने की मुख्यधारा में लाना शामिल है।" उर्वशी बुटालिया ने प्रकाशवंती नाम की एक विभाजन उत्तरजीवी की कहानी सुनाई, जिनसे वह पंजाब के जालंधर में गांधी वनिता आश्रम में मिली थी। अगस्त, 1947 में प्रकाशवंती 20 साल की हिंदू पत्नी और मां थीं, जो पाकिस्तान के एक गांव शेखपुरा में रहती थीं। जैसे ही मुस्लिम भीड़ उसके घर पहुंची, उसके पति ने उसे अपवित्रता और बलात्कार को रोकने के लिए खुद को मारने के लिए कहा। उसने उसे जोर से मारा और वह बेहोश होकर गिर पड़ी। यह सोचकर कि वह मर चुकी है, उसका पति चला गया और पहुंचे मुस्लिम हमलावरों ने भी उसे अकेला छोड़ दिया (उन्होंने भी सोचा कि वह मर चुकी है)। जब उसे होश आया तो उसने अपने पति और बच्चे दोनों को मृत पाया। तबाह हो गई, वह एक आश्रम में चली गई, जहाँ उसका शेष जीवन व्यतीत हुआ।¹³

इतिहासकार विलियम डेलरिम्पल कहते हैं, "जो लोग एक साल पहले एक-दूसरे की शादी पार्टियों में शामिल होते थे ... एक-दूसरे की हत्या कर रहे हैं, एक-दूसरे की बेटियों के साथ बलात्कार कर रहे हैं, एक-दूसरे के बच्चों को भून रहे हैं।" इस अराजकता के बीच, महिलाओं को विशेष रूप से भयानक उपचार के लिए चुना गया। कई महिलाएं रेप के डर में रहती थीं। अमोलक 1947 में पेशावर में अपने माता-पिता के साथ रहने वाली सत्रह वर्षीय लड़की स्वानी ने जब सुना कि एक मुस्लिम भीड़ उसके घर आ रही है, तो उसके पिता ने उसे और उसकी माँ को बताया कि भीड़ घरों में आग लगा रही है और महिलाओं को ले जा रही है। वह कहती है:

वह बहुत डर गया और उसने जल्दी से मेरी माँ को एक बोतल पेट्रोल और कुछ माचिस देकर उसे कहा ... 'अगर हम नीचे जीवित नहीं रहते हैं, तो अपना सम्मान मत छोड़ो। खुद पर और हमारी बेटी पर पेट्रोल डालो और अपने आप को उन लोगों के हाथों में मत लेने दो।'

भीड़ ने अंततः उनके घर को पार कर लिया, और अमोलक और उसका परिवार भारत के अमृतसर भाग गए। लेकिन दूसरी महिलाओं का ऐसा हश्र नहीं हुआ। सरदार विभाजन के समय एक किशोर जोगिंदर सिंह कोहली, वीरवाली नाम की एक महिला को याद करते हैं, जो पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में अपने गांव में रहती थी। वह कहता है:

वह बहुत सुंदर महिला थी। लेकिन अशांति के दौरान... मुस्लिम उसका पीछा कर रहे थे... वहां था हमारे गांव में एक सिख मंदिर है, इसलिए वह शरण लेने के लिए मंदिर के अंदर भागी। उसने पवित्र पुस्तक का सम्मान किया ... अपने शरीर को मिट्टी के तेल में डाल दिया और खुद को आग लगा ली।¹⁴

इतिहास में ऐसी कई घटनाएं हैं जो बताती हैं कि उस समय महिलाओं की सामाजिक स्थिति कितनी दयनीय थी। महिलाओं को क्षत-विक्षत कर दिया गया, उनके स्तन काट दिए गए, उनके शरीर को दूसरे समुदाय के धार्मिक प्रतीकों के साथ उकेरा गया और सड़कों पर घुमाया गया। जीडी खोसला ने अपनी किताब *स्टर्न रेकर्निंग* में एक ऐसी लड़की का उदाहरण दिया है जिसके संबंध को एक घेरे में खड़ा करके देखा जाता था जब उसके साथ कई पुरुषों ने बलात्कार किया था।

महिलाओं पर उनके परिवार के पुरुषों द्वारा आत्महत्या के रूप में हिंसा की जाती थी, उन्हें सम्मान के नाम पर मजबूर किया जाता था या उनकी हत्या कर दी जाती थी। ऐसी महिलाएं भी थीं जिन्होंने अपनी पवित्रता बनाए रखने के लिए खुद आत्महत्या कर ली और बाद में उन्हें 'शहीदों' के रूप में महिमामंडित किया गया। थोहा कस्बे में सामूहिक आत्महत्याएं खालसा, रावलपिंडी, 90 महिलाओं के कुएँ में कूदने के साथ, समाचारों में बहुत प्रचारित हुआ। ये महिलाएं समाज की पितृसत्तात्मक धारणाओं की, स्त्री की तथाकथित पवित्रता पर आधारित समुदाय के सम्मान की पुष्टि कर रही थीं। एक अन्य प्रकार की हिंसा जिसका महिलाओं को सामना करना पड़ा, वह विभाजन के दौरान हुई हिंसा के ठीक बाद राज्य द्वारा की गई थी। कई परिवारों ने अपनी महिला रिश्तेदारों के लापता होने या अपहरण होने की सूचना दी थी। इस तरह की रिपोर्टों के विशाल पैमाने ने दोनों पक्षों की सरकारों को कार्य करने के लिए मजबूर किया और यह कार्य एडविना माउंटबेटन के तहत यूनाइटेड काउंसिल फॉर रिलीफ एंड वेलफेयर द्वारा किया गया।

सितंबर 1947 में, दोनों देशों (भारत और पाकिस्तान) के प्रधानमंत्रियों ने लाहौर में मुलाकात की और दोनों पक्षों में अपहृत महिलाओं को बरामद करने के लिए एक कार्यक्रम शुरू करने का फैसला किया। 6 दिसंबर 1947 को, इस उद्देश्य के लिए एक अंतर-डोमिनियन संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे और कार्यक्रम को 'सेंट्रल रिकवरी ऑपरेशन' कहा गया था। 1949 में अपहृत व्यक्ति अधिनियम भी इसी कारण से पारित किया गया था। इस अधिनियम के माध्यम से, राज्य ने स्वयं निर्णय लिया कि किसे 'अपहृत व्यक्ति' माना जाना चाहिए और महिलाओं के अधिकारों की पूरी तरह से अवहेलना की गई। अपहरण किए जाने के बाद, कई महिलाओं ने अंततः अपने अपहरणकर्ताओं के साथ परिवारों को शुरू करते हुए, अपनी नई परिस्थितियों के लिए अनुकूलित किया था। इसी कार्यक्रम की वजह से उनकी जिंदगी एक बार फिर उखड़ गई। सामाजिक कार्यकर्ता भी उन्हें उनके मूल देशों में वापस करने के लिए कानून द्वारा बाध्य थे, और इस मामले का फैसला उनके धर्मों द्वारा किया जाता था। ऐसे और भी कारण थे जिनकी वजह से महिलाएं अपने परिवारों या समुदायों में वापस जाने से खुश नहीं थीं। उनके अपहर्ताओं द्वारा उन्हें 'दूसरे' देश में कठिनाइयों के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया था। इसके अलावा, महिलाएं दूर जाने के डर से वापस लौटने से डरती थीं क्योंकि वे अब शुद्ध नहीं थीं।

इन महिलाओं द्वारा पैदा किए गए बच्चों के संबंध में, राज्य ने उन्हें नाजायज मानने से इनकार कर दिया। परिणामस्वरूप महिलाओं को उनके बच्चों से अलग कर दिया गया और बच्चों को उस देश के नागरिकों के रूप में मान्यता दी गई जिसमें वे पैदा हुए थे और अपने पिता के साथ रहते थे। गर्भवती महिलाओं को या तो अपने बच्चों को गोद लेने के लिए देना पड़ता था या गर्भपात (या सफाई जैसा कि वे इसे कहते हैं) के लिए जाना पड़ता था। जबकि मुस्लिम महिलाओं को पाकिस्तान में अधिक आसानी से स्वीकार किया गया था लेकिन भारत में, विशेष रूप से हिंदुओं के बीच, शुद्धता का मुद्दा महत्वपूर्ण हो गया। जो बच्चे अपनी माताओं के साथ आने में सक्षम थे, वे लगातार उल्लंघन का हिस्सा बन गए और माताओं को उन्हें गोद लेने या परिवार छोड़ने का विकल्प दिया गया। विभाजन के दौरान जिन महिलाओं को बर्बरता का शिकार होना पड़ा, उन्हें फिर से अपमानित किया गया और खारिज कर दिया गया क्योंकि वे अब 'शुद्ध' नहीं थीं।

अन्य, कुछ हद तक कम, लेकिन महत्वपूर्ण, महिलाओं के जीवन पर प्रभाव भी थे। विभाजन के कारण कई महिलाओं को जीवन में अकेला छोड़ दिया गया था। बंटवारे ने कई परिवारों का जीवन उजाड़ दिया था। महिलाएं सामाजिक कार्यकर्ता बन गईं या उन्हें अपने परिवार का समर्थन करने के लिए अन्य कार्यों में संलग्न होना पड़ा। कभी-कभी बेहतर

विकल्प के अभाव में महिलाओं को उनके परिवारों द्वारा छोड़ दिया जाता था। दूसरी ओर, इस अकेलेपन के परिणामस्वरूप, महिलाओं के सार्वजनिक क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए अभूतपूर्व तरीके से स्थितियां भी बनाई गईं¹⁵

विभाजन ने महिलाओं को दंगों की स्थिति का शिकार बनने पर मजबूर कर दिया। अपहरण और यौन शोषण के कारण उन्होंने अव्यवस्था महसूस की और अपना सम्मान और सम्मान खो दिया। विभाजन की अवधि के दौरान इन महिलाओं के साथ हुए दुर्व्यवहार से पता चलता है कि वे संपत्ति थीं और वे उनके परिवार की थीं और उन्हें इंसान भी नहीं माना जाता था। पितृसत्तात्मक व्यवस्था के माध्यम से महिलाएं अपने संबंधित समुदायों के भीतर सांस्कृतिक बाधाओं से बंधी हुई थीं। ठीक होने की अवधि के दौरान भी, महिलाओं को अतीत में अपने बुरे अनुभवों का सामना करना पड़ा। पुरुष युद्ध से नायक बनकर वापस आते हैं, जबकि दंगों और युद्ध के बाद, महिलाओं के अस्तित्व का कोई अर्थ नहीं रह जाता है और वे हर समय आपदा में रहती हैं।

सन्दर्भ :

1. नरिंदर इकबाल सिंह, पंजाब में सांप्रदायिक हिंसा (1947), अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस, जीएनडी यूनिवर्सिटी, अमृतसर, 2002, पृष्ठ 11
2. एंड्रयू जे मेजर, "मुख्य पीड़ित: पंजाब के विभाजन के दौरान महिलाओं का अपहरण", डीए लो और एच. ब्रास्टेड (संपा.) फ्रीडम, ट्रॉमा, कंटीन्यूटीज: नॉर्दर्न इंडिया एंड इंडिपेंडेंस, सेज, नई दिल्ली, 1988, पृ.59
3. इयान टैलबोट "1947 के विभाजन का साहित्य और मानव नाटक", डीए लो और हावर्ड ब्रास्टेड (सं।), स्वतंत्रता, आघात, निरंतरता: उत्तरी भारत और स्वतंत्रता, पृष्ठ 43
4. उर्वशी बुटालिया , "निरंतरता, राज्य और लिंग: विभाजन के दौरान महिलाओं की एजेंसी पर", आर्थिक और पॉलिटिकल वीकली, वी. 28, नंबर 17, 1993, पृ.डब्ल्यूएस-13
5. डीए लो, "डिगिंग डीपर: 1940 के दशक में उत्तरी भारत", दक्षिण एशिया वॉल्यूम 18, 1995, ज्ञानेश में उद्धृत कुदैसिया और ताई योन टैन, द आफ्टरमाथ ऑफ़ पार्टिशन ऑफ़ साउथ एशिया, रूटलेज , लंदन, 2002, पृष्ठ 22
6. उर्वशी बुटालिया "अपहृत और विधवा महिलाएं: कामुकता और नागरिकता के दौरान के प्रश्न विभाजन", पृष्ठ 92
7. बेडे स्कॉट "विभाजन निकाय: साहित्य, अपहरण और राज्य", हस्तक्षेप, वॉल्यूम 11, नंबर 1, 2009, पृष्ठ 92

8. नरिंदर इकबाल सिंह, पंजाब के विभाजन की पूर्व संध्या पर सांप्रदायिक हिंसा (1947), अप्रकाशित एम.फिला, निबंध, जीएनडी विश्वविद्यालय, अमृतसर, 1993, पृष्ठ 105
9. रितु मेनन और कमला भसीन , बॉर्डर्स एंड बाउंड्रीज़, पृष्ठ 76
10. बेडे स्कॉट, "विभाजन निकाय: साहित्य, अपहरण और राज्य", पृष्ठ 36
11. रितु मेनन और कमला भसीन , "वसूली, टूटना, प्रतिरोध: भारतीय राज्य और विभाजन के दौरान महिलाओं का अपहरण", आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, वॉल्यूम 28, नंबर 17, 1993, पी। WS-3
12. लियोनार्ड मोस्ली, द लास्ट डेज़ ऑफ़ ब्रिटिश राज, जैको , बॉम्बे, 1971, पृष्ठ 284
13. पलाश घोष, "भारत और पाकिस्तान का विभाजन: एक महाकाव्य, ऐतिहासिक पैमाने पर महिलाओं का बलात्कार", इंटरनेशनल बिजनेस टाइम्स, यूएस संस्करण, 08/06/2013
14. स्टीव चाओ, "विभाजन को याद रखना: 'यह एक बूचड़खाने की तरह था'", अल जज़ीरा समाचार, 16 अगस्त 2017
15. हिमांशी नागपाल , "पंजाब का विभाजन: महिलाओं के अधिकारों के उल्लंघन की कहानी", भारत में नारीवाद, 27 जून 2017



INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118



ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 **9940 572 462**  **6381 907 438**  **ijirset@gmail.com**



www.ijirset.com

Scan to save the contact details